JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सुमति सक्सेना लाल की कहानियों में स्त्री अंतर्द्वन्द्व ('अलग- अलग दीवारें' के विशेष संदर्भ में)

डॉ.श्यामप्रकाश आ. पांडे
प्रोफेसर एवं हिन्दी विभाग प्रमुख,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
आर्वी, जि. वर्धा - 442201

सारांश – मानवीय सभ्यता का विकास स्त्री और पुरुष दोनों की भागीदारी से ही संभव हुआ है। यद्दपि मनुष्य पाषाण युग में समूह में जीवनयापन करते थे तथापि स्त्री को बच्चों के लालन-पालन की जिम्मेदारियां और पुरुष बाहरी कार्य के माध्यम से श्रम का बंटवारा किया गया था। गुफाओं में रहते हुए बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी सामान्यतः स्त्री के कंधों पर थी। कृषि युग में यही जिम्मेदारी द्विगुणित हो गई तथा स्त्री परिवार एवं खेतों में पुरुषों के साथ श्रम का कार्य करने लगी थी। सांस्कृतिक विकास के क्रम में परिवार में स्त्री का स्थान केन्द्रीय हो गया था, अतः मातृसत्ताक व्यवस्था निर्मित हुई जिसके अवशेष अनेक समाजो में आज भी विद्यमान है। मुद्रा के चलन ने मानव समाज को मालिक और श्रमिक के रुप में विभाजित कर दिया। संपत्ति की अवधारणा ने जन्म लिया और पुरुष को शक्तिशाली मानकर परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेदारी प्राप्त हुई। यही से स्त्री धीरे-धीरे हाशिये की ओर जाने लगी। औद्योगिकीकरण के साथ ही नारी का स्थान दुय्यम होने लगा था। आधुनिकता के साथ-साथ स्त्री चेतना का विकास हुआ तथा स्त्री विमर्श के माध्यम से स्त्री अस्मिता, स्त्री की सामाजिक समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं पर विचार मंथन हुआ तथा अनेकानेक कानून बने। इसी बीच बाजारीकरण का दौर आया और मनुष्य भी व्यवस्था में एक संसाधन बन गया, जिसने समाज में मानव को भी केवल भौतिक वस्तु के रूप में देखना आरंभ कर दिया। जिससे मूल प्रश्नों से इतर अनेक नये प्रश्न भी निर्माण हो गए हैं। भारतीय समाज सदा से ही परंपराप्रिय रहा है। परिवर्तन इतनी तेजी से हुआ है कि पुरानी व्यवस्थाएं जर्जर हो रही है तथा नई व्यवस्थाएं पूर्णरूपेण अस्तित्व में आनी शेष हैं। साहित्य हमेशा मानवीय हित की दृष्टि से सृजित होता, इसलिए हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन के माध्यम से स्त्री प्रश्न निर्मित हुए है, उनको केवल भौतिक दृष्टि से ही नहीं, मानवीय दृष्टि से भी पुर्नमूल्यांकित करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। समाज में एकल जीवन की परिपाटी तेजी से बढ़ रही है, पारिवारिक व्यवस्था की स्थितियां परिवर्तित होने पर वैकल्पिक व्यवस्थाओं पर विचार की आवश्यता है। प्रस्तुत शोधालेख में स्त्री के अन्तर्द्वन्द्वों को 'सुमति सक्सेना लाल' की कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द – पाषाण युग, कृषि युग, संपत्ति, स्त्री चेतना, स्त्री विमर्श, औद्योगिकीकरण, बाजारीकरण, स्त्री लेखन, स्त्री प्रश्न।

नारी अर्थात् आधी आबादी। समाज में पुत्री से लेकर माँ तक के अलग-अलग किरदार निभाती सदियों से अपने भीतर को छिपाकर समाज को गतिमान करने वाली नारी, आर्थिक क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चलनेवाली नारी। जन्म से लेकर मृत्यु तक कितने द्वंद्वों में जीती है, इसे समझना अत्यंत दुर्गम्य हैं। । एक स्त्री के लिए भी जीवन के अनेकानेक पहलुओं के बीच सुशिक्षित, अल्प शिक्षित, अशिक्षित, घरेलू तथा कामकाजी स्त्रियों के भीतर झांककर इनकी थाह पाना दुष्कर कार्य हैं, बावजूद इसके सुमति

सक्सेना लाल ने अपनी कथाओं के माध्यम से स्त्री के अंतर्द्वन्द्वों को कुशलता के साथ चित्रित किया है। इसकी प्रतिती उनके साहित्य से होती है।

सुमति सक्सेना लाल हिंदी साहित्य क्षेत्र में एक कथाकार के रुप में सुविख्यात है । आपका जन्म 26 मई, 1944 को उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में हुआ था। 1965 में लखनऊ विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम.ए. करने के पश्चात आप महाविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगीं। आपकी प्रथम कहानी 1969 में 'धर्मयुग' में प्रकाशित हुई थी। तत्पश्चात् अनेक सुविख्यात पत्रिकाओं में आपकी कहानियां प्रकाशित हो चुकी हैं। 'अलग- अलग दीवारें', 'दूसरी शुरुवात' 'कवच' कहानी संग्रह और 'चौथा पुरुष', 'दण्डशिला', 'होने से न होने तक', 'फिर और फिर' तथा 'वे लोग' उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। 'अलग- अलग दीवारें' कहानी संग्रह की लगभग सभी कहानियों के सभी नारी पात्र किसी न किसी द्वंद्व में दिखाई देते हैं।

भूमंडलीकरण, उदारीकरण, आधुनिकतावादी जीवन-दर्शन तथा अर्थ-क्रेन्दित सोच के चलते सामाजिक सोच में निरंतर परिवर्तन दिखाई दे रहा है। सामान्य रूप से समाज मूल्यों में अनेक परिवर्तन हुए है। यह एक सामाजिक सत्य है, जिसकी प्रतीति समाज में देखी जा सकती है। बदलते हुए मूल्यों ने मानवीय जीवन में जहाँ वैयक्तिकता को जन्म दिया है, वहीं अनेकों को अपने होने का अहसास भी कराया है, सामाजिक हाशिए पर विद्यमान अनेक वर्गों में स्वतंत्र चेतना का प्रसार किया तथा आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया है। इसी आत्मनिर्भरता के चलते अनेक सामाजिक व्यवस्थाओं में बदलाव की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है। इसी के चलते अनेक नये प्रश्न निर्माण होने लगे हैं। नारी प्रश्नों को भी इसी के आलोक में देखा जा सकता है। सभी प्रश्नों के उत्तर सरल नहीं है। पहला प्रश्न है कि मानव का शिक्षित और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना क्या बुरा होता है? इस प्रश्न के अनेक पहलू हैं, इसीलिए उत्तर भी परिस्थिति के अनुरुप बदल जाता है। भारतीय समाज में पुरुष का शिक्षित तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना अच्छा माना गया है। लेकिन स्त्री के लिए यह सब सही है या गलत - यह प्रश्न बार-बार निर्माण हो जाता है, क्योंकि उसे अक्सर इसी द्वंद्व में जीवन जीना होता है कि उसे परिवार की अपेक्षाओं पर खरा उतरना है। "स्त्री विमर्श के संदर्भ में अनामिका का लिखती है – "स्त्री एक साथ कई धरातलों पर जी लेती हैं, एक साथ कई-कई स्थानिकताएं और काल-बोध वैसे तो हर भारतीय की नियती है, पर स्त्री ने तो जैसे हमारे देश की इस सच्चाई का रूपक पूरी मनीषा में आत्मसात किए है।"[1] भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में आज भी स्त्री और पुरुष को अलग-अलग नजरिये से ही देखा जाता है। पढ़ाई करते हुए तथा नौकरी पाने में अधिक उम्र हो जाने पर विवाह में बाधाएं निर्माण हो जाती है। उच्च वर्ग में यह समस्याएँ शायद कम होती हैं। किंतु मध्यम एवं निम्न वर्ग में आज यह समस्या विकराल हो रही है। दूसरी ओर पति से पत्नी की कमाई अधिक हो तब भी पुरुष का अहं जागृत हो जाता है। जिसका परिणाम भी स्त्री को ही भुगतना होता है। समाज एवं परिवार में पढ़ी-लिखी, आर्थिक रुप से सबल स्त्रियों से लाभ तो सभी लेना चाहते हैं किंतु उनकी समस्याओं को समझने वाले कम ही होते हैं। स्त्रियों के विषय में समाज की सामान्य सोच क्या है। इसे 'दूसरी बार न्याय' कहानी में गार्गी के जीवन की घटना से समझा जा सकता है। प्राध्यापक गार्गी और उसके पति शिव में निरंतर होती अनबन, जो अक्सर शिब के असंवेदनशील रवैये के चलते होती है, के बारे में गार्गी की जेठानी के विचारों से स्पष्ट हो जाता है। गार्गी की जेठानी अपने देवर का पक्ष ले कर कहती है कि – "क्यों क्या कमी है शिव में.... फिर ऐसी भी क्या खासियत है गार्गी में....यूनिवर्सिटी में पढ़ाती है तो क्या हुआ, बहुत-सी औरतें करती हैं नौकरी और अगर है भी खासियत तो यह तो गार्गी के घर वालों की प्रॉब्लम थी....उन्हें देखना तोलना चाहिए था। हम लोग तो जाकर यह कहते नहीं कि तुम्हारी लड़की बेहतर है हमारे लड़के से....।"[2] एक नारी का अंतर्द्वन्द्व तो यही है कि कभी-कभी नारी भी नारी की पीड़ा को समझना नहीं चाहती हैं और अक्सर समानता के स्थान पर पुरुष प्रधान संस्कृति का ही समर्थन करती दिखाई देती है।

भारतीय सामाजिक ताना-बाना ऐसा है कि कोई पुरुष पत्नी के रहते दूसरी स्त्री से संबंध स्थापित करे तो पत्नी को ही अक्सर घर छोड़ना पड़ता है अथवा उसे अपनी सौत के साथ ही निर्वाह करना पड़ता है। सामाजिक न्याय की स्थिति यह है कि तलाक लेने पर भी स्त्री को ही घर छोड़ना पड़ता है। नारी अक्सर इसी द्वंद्व में जीती है कि जिस घर में वह रह रही है, जिसे वह अपने सपनों के अनुरूप सजाती संवारती है, उसमें उसका अधिकार क्या है? माँ बनने के बाद तो उसकी स्थिति और भी गंभीर होती है। बच्चों से क्या कहे या उनका पालन-पोषण अकेली कैसे करे, यह समस्या निरंतर बनी रहती है। अक्सर परिवार में पत्नी का स्थान कोई दूसरी स्त्री ले ले तो

पति के रहते भी उसकी स्थिति एक अजबनी-सी हो जाती है। अनेक स्त्रियां इसी द्वंद्व के कारण अकेली रहतीं हैं। नारी को बार-बार सोचना पड़ता है कि पारिवारिक ताने-बाने वाले समाज में उसकी स्थिति क्या है? 'दूसरी बार न्याय' कहानी में शिव द्वारा एक विधवा से संबंध बना लेने पर उसको अपने ही घर में पनाह देती है, स्वयं गार्गी स्वयं भी अपने ही घर में रहने का फैसला लेती है, नारी के इसी द्वंद्व को गार्गी अपनी भतीजी अमृता के समक्ष उजागर करते हुए कहती है कि- "हाँ अमृता ... यूनिवर्सिटी में अनु ने भी यही कहा था ...क्यों रह रही हो उस घर में ...कैसे रह पा रही हो? पर इतने वर्षों ने मेरी सोच को बदल दिया था ...स्थितियों से जूझने के मेरे तरीके को भी। लगा था, क्यों छोडू यह घर? लगा था, ग़लती आदमी करता है.... घर औरत क्यों छोड़ती है...क्यों छोड़ना पड़ता है उसे घर...? घर वही बनाती संवारती है न...! हमारे कानून बनानेवाले...वुमैन आर्गेनाइजेशन क्यों नहीं करते कुछ"[3] निश्चित ही इन आयामों में कानूनी बाधाएँ कम हो गई हैं, स्त्रियों को भी पुरुषों की भाँति विवाह बाह्य संबंधों की स्वतंत्रता प्रदान की है, परंतु क्या मनुष्य की भावनाएं केवल कानूनों से नियंत्रित की जा सकती है। अतः समाज को ही इस विषय पर विचार करना होगा। विचारधारा में बदलाव लाना होगा। साथ ही यदि समाज आधुनिक वैयक्तिक विचार को अपनाने की ओर अग्रेसर हो तो नयी व्यवस्थाओं का ताना-बाना भी बनाना होगा।

समाज का ताना-बाना पूर्णतः मानवीय विश्वास पर आधारित है। विश्वास के अभाव में सामाजिक नियमों, रिश्तों-नातो, मानवीय संबंधों का औचित्य नहीं है। साथ ही उन विश्वासों को बनाएं रखने की संपूर्ण जिम्मेदारी भी मानव समाज की ही है। पति और पत्नी के संबंध भी विश्वास पर आधारित है, उस विश्वास को बनाए रखने की जवाबदेही भी पति-पत्नी दोनों पर समान होती है। परंतु किसी एक के द्वारा जिम्मेदारी का योग्य निर्वहन न किए जाने पर, दूसरे का अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसी के विषय में अपने पति द्वारा विश्वास हनन किए जाने के बाद भी अपना मानवता पर विश्वास स्थिर रखते हुए विचारक के रूप में गार्गी अपनी भतीजी को समझाते हुए कहती है कि - "एक बात कहूँ अमृता...जो कुछ तुम्हारी इतनी नजदीकी लोगों के साथ हुआ है, या हो रहा है उससे दुनिया को लेकर कोई निगेटीव नज़रिया मत बना लेना...यही बात बंटी को भी समझाती हूँ। जो कुछ मेरे साथ हुआ वह मेरा भाग्य है...पर सब के साथ तो ऐसा नहीं होता न। वहुतों के लिए ज़िन्दगी बहुत सुदर भी होती है। सच कह रही हूँ अमृता। इस सब के बावजूद मेरा हूमन गुडनेस पर विश्वास नहीं डिगा...एक क्षण को भी नहीं।"[4] यही नारी का अंतर्द्वन्द होता है कि परिवार को बनाये रखने के लिए वह अनेक बार चाहते हुए अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं कर पाती है।

अकेलेपन से निजात पाने और अपनी मजबूरियों के कारण मनुष्य जीवन में कितने समझौते कर लेता है। उसमें नारी के लिए के लिए तो सामाजिक परिस्थितियां हर संशय की स्थिति में डालने वाली होती है। शारीरिक और भौतिक जरुरते भी अनेक बार सजबूरी का कारण बन जाती है। 'दूसरी बार न्याय' कहानी का शिव अपनी ही एक क्लाइंट से संबंध बना लेता है तो वह उसके परिवार में रहने लगती है। वहाँ वह कितना कुछ सहन करती है। जिसके संदर्भ में बात करते हुए गार्गी कहती है कि – " छोटी मशीन की तरह रात-दिन काम में दौड़ती रहती है। उसकी बात कर रही हो? अमृता इस घर में सरवाइवल का उसका अपना तरीका है। आइ मस्ट से कि उसने बहुत बुद्धिमानी से अपने-आपको इस घर...और घर के लोगों के लिए उपयोगी बनाकर अपना जीना आसान कर लिया है।"[5] छोटी जैसी नारी के भीतर का द्वंद्व उसके पुत्र के बारे में बताते हुए स्पष्टतः समझा जा सकता है, जब वह अमृता से कहती है कि – "पता नहीं…। शायद बहुत समझदार था वह...हम्रेभर में मुझे और अपने आप को आगे के झंझट और से मुक्त कर गया।"[6] इससे अनेक प्रश्न निर्माण होते हैं। समाज को ही इनके उत्तर खोजने होंगे।

मानवीय जीवन का एक अन्य पहलू यह भी है कि पति और पत्नी दोनों ही से मिलकर संसार पूरा होता है। किसी एक में कमी हो तो माता-पिता बनने के सौभाग्य से परिवार वंचित रहता है। नारी में कमी हो तो पुरुष दूसरी स्त्री से विवाह कर लेता है किंतु यदि पुरुष में कमी हो तो उसका दोष भी अक्सर नारी को भोगना पड़ता है। विवाह उपरांत मातृत्व की प्राप्ति तक नारी इसी द्वंद्व में जीती है कि उसे मातृत्व का सम्मान कब मिलेगा। यदि नारी सम्मान देती है तो निश्चित ही उसे भी सम्मान की अपेक्षा रखने का पूरा अधिकार है। आजीवन अपने और पति के सम्मान को बचाने के लिए जो नारी अपने ससुर के समक्ष अपने पति की कमजोरियों का कभी जिक्र भी नहीं करती है क्योंकि इससे पति का सम्मान कम हो सकता है। किंतु पति ही जब अपनी पत्नी का सम्मान न कर पाये तो निश्चित ही उसे छोड़ देना ही योग्य समझती है। कौशल्य दी कहानी की कौशल्या ऐसी ही नारी जो अपने सम्मान को सर्वोपरि रखती है। और अपने

पति से कभी कुछ नहीं मांगती है। अपनी आत्मनिर्भरता के चलते वह अपने पति के संपत्ति पर भी अधिकार को छोड़ देती है। लेकिन एक दिन जब पति अपने पिता बनने की अक्षमता का दोष कौशल्या पर लगाता है, तो वह सहन नहीं कर पाती और अपने सम्मान की खातिर वह पैंसठ साल की उम्र में अपना घर छोडने का फैसला लेती है। कौशल्या पति से अलग हो कर स्वयं को द्वंद्व मुक्त करना चाहती है। वासन्ती से बातचीत करते हुए वह कहती है कि – "इस रिश्ते के ढोंग को मैं कब तक निभाती रहूँ?" वह सीधे मेरी तरफ देखती है...उनकी आँखों में आँसू है.... "फिर क्यों वासन्ती ...किसलिए...व्हाई शुड आई..."[7]

एक सामाजिक-पारिवारिक ताने-बाने में रहते हुए व्यक्ति की स्वतंत्रता की अनेक सीमाएं स्वयं ही बंध जाती है। जीवन में अक्सर ऐसा होता है कि व्यक्ति परिवार से अलग कुछ सोच भी नहीं सकता है। दूसरी ओर आधुनिक छोटे परिवार की सोच ने वर्तमान में अपनेपन की आजीवन दुहाई देने वाले परिवार भी माता-पिता के बुढ़ापे में जब उनको परिवार की सबसे अधिक आवश्यकता होती है तभी उन्हें अकेले जीने के छोड़ कर स्वयं की गृहस्थी में बंदिस्त हो जाते हैं। ऐसे में कोई क्या अकेली नारी किसी से सहारे की अपेक्षा कर सकती है। यह पुरुष तथा नारी दोनों ही का समान अंतर्द्वन्द्व हैं कि वह अपने लिए किसी दूसरे से कोई अपेक्षा रखे या न रखे। कौशल्या दी कहानी की कौशल्या दी आजीवन अपने ससुराल से अलग रहती है, जिसका अपना कोई नहीं है। वह अपने जीवन के अंतिम दिनों में अपने भतीजे के पास रहती है, लेकिन किसी कारणवश अपनी सबसे नजदीकी तथा अन्तरंग माननेवाली वासंती सिन्हा को फोन करती है, तब वासन्ती सिन्हा भी परिवार से सलाह लेती है किंतु हमेशा के लिए अपने पास रखने को तैयार नहीं होती हैं। लेकिन कौशल्य दी की मृत्यु के समाचार सुन कर वह विचार करती है कि – "आज अफसोस होता है कि मैंने उनसे बात क्यों नहीं की थी...। घर मेरा था --- मेरा जीवन था...सुविधा-असुविधा भी मेरी थी...कौशल्या दी से सम्बन्ध भी मेरा था। बच्चे और भाई-बहन उस बीच में कहाँ आते थे। भाई-बहन कौशल्या दी से मेरी अन्तरंगता को नहीं समझ सकते थे.....और बच्चे मुझसे एक पीढ़ी आगे...आज की सोच में पले बढ़े। पर मुझसे वह चूक क्यों हो गयी।"[8] नारी का भावनाशील मन और एक उम्र में आकर जीवन की मजबूरियाँ उसे सचमुच कार्य करने में सहायक हो सकती है। और यदि वह ऐसे निर्णय ले तो हमारे देश में उसकी सहायता के लिए योग्य व्यवस्थाओं की तथा सुविधाओं की अत्यंत कमी दिखाई देती है। निश्चित ही ऐसी व्यवस्थाओं की दरकार होगी, जहाँ नारी सम्मान के साथ जीवन-यापन कर सके।

इसी प्रकार 'सलीब अपने-अपने' कहानी में नीलिमा जिसने सुनील ने झूठी बातों में आकर अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया तथा अंजु जिसे अन्य स्त्री के कारण पति ने तलाक दे दिया।'कवच' कहानी की मानी जो अपने सम्मान के लिए उस परिवार को छोड़ देना पड़ा जिसमे गर्व के साथ हमेशा में अधिकारपूर्वक रही। 'दंश' कहानी की अप्पू जिसने स्वयं को पारिवारिक संबंधों से अलग-थलग कर लिया। 'द्रष्टा' कहानी की शुभा जिसने प्रिंसीपल के रूप में महाविद्यालय को उँचाइयों तक पहुँचाया, जिसके लिए उन्होंने व्यक्तिगत जीवन को तिलांजलि दे दी, आज उसी महाविद्यालय में वे कितनी अजनबी है। 'दंड़-मुक्ति' कहानी की अमिता और दिव्या, जिन्होंने अपने माता-पिता के अनैतिक व्यवहारों के चलते जीवन भर की सजा पायी थी। अंततः अमिता ने आत्महत्या कर ली और दिव्या को पागलपन के दौर पड़ने लगे, इसी कारण पति ने भी छोड़ दिया था। 'विस्थापित' कहानी की दीपा जिसके पिता अफसर थे, भाई-बहन रेलवे में अच्छे पद पर नौकरी लग गई, परंतु घर बसाने के चाह में दीपा का विवाह एक मध्यमवर्गीय परिवार में कर दिया गया। 'अलग-अलग दीवारें' कहानी की मीरा अपने पति और उसकी आमदनी से असंतुष्ट है। सारा समय वह बीते जीवन को याद करती रहती है। इसके अलावा भी कहानियों में अनेक पात्र है, जिनका अंतर्द्वन्द्व स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है। सभी स्त्री पात्र सुशिक्षित है, अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम है। लेकिन क्या उनके निर्णय लेने की क्षमता ही उनके अकेलेपन का कारण बन रही है। दि ग्लोबलिस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार आज भारत में 7.2 करोड़ स्त्रियां अकेले रहती है, और यह आँकडा इसलिए विचारणीय है कि इनमें अधिकांश ने स्वयं अकेले रहने का निर्णय लिया है।[9]

सारांश में अनेकों अंतर्द्वन्द्वों के साथ जीने वाले नारी वर्ग के अंतर्द्वन्द्व उत्पन्न करने वाले प्रश्नों के उत्तर अभी तक अनुत्तरित है। इनमें से अनेक द्वन्द्व सामाजिक परिस्थितियों के कारण तो अनेक केवल मानसिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हो रहे हैं, जिनके उत्तरों की तलाश में अनेक बार मनुष्य उलझकर रह जाता है। व्यवस्थाओं के समक्ष खड़े इन यक्ष प्रश्नों के उत्तर निश्चित ही केवल कानून बनाकर मिलना आसान नहीं होगा, सामाजिक मानस परिवर्तन की आवश्यकता भी निरंतर महसूस होती है। वर्णित सारी समस्याएं

परिवार से जुड़ी दिखाई देती है क्योंकि आज भी समाज का मुख्य आधार परिवार ही है। इस संदर्भ में नासिरा शर्मा कहती है कि – "हमारी पुरानी पौराणिक, ऐतिहासिक स्त्रियों की महत्वकांक्षाएं मुख्यतः पति और पुत्र, परिवार और निजी इच्छाओं पर केन्द्रित थी। आज की सचेत और जागरूक स्त्री परिवार से जुड़कर समाज के लिए कुछ रचनात्मक कार्य करना चाहती है। यदि किसी औरत का पति उसकी इच्छा के विरूद्ध घर तोड़ता है तो उसमें इतना आत्मविश्वास होना चाहिए कि घर टूटने को वह व्यक्तित्व टूटने के रूप में लेने से बच सके।"[10]

संदर्भ –

1. मधु कांकरिया का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श, रंजिता रा.परब, 122, https://shodhganga.inflibnet.ac.in
2. अलग-अलग दीवारें (कहानी सग्रंह), सुमति सक्सेना लाल, पृ.12 , भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली- 3, 2009
3. अलग-अलग दीवारें (कहानी सग्रंह), सुमति सक्सेना लाल, पृ.18 , भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली- 3
4. अलग-अलग दीवारें (कहानी सग्रंह), सुमति सक्सेना लाल, पृ.23, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली- 3
5. अलग-अलग दीवारें (कहानी सग्रंह), सुमति सक्सेना लाल, पृ26, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली- 3
6. अलग-अलग दीवारें (कहानी सग्रंह), सुमति सक्सेना लाल, पृ.21, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली- 3
7. अलग-अलग दीवारें (कहानी सग्रंह), सुमति सक्सेना लाल, पृ34-35, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली- 3
8. अलग-अलग दीवारें (कहानी सग्रंह), सुमति सक्सेना लाल, पृ.42, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली- 3
9. शैली चोपडा, https://www.theglobalist.com/indias-single-women/
10. मधु कांकरिया का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श, रंजिता रा.परब, पृ.122, https://shodhganga.inflibnet.ac.in